पन्चमेरु पूजन

रचयिता - पं द्यानतराय जी कृत

प्रस्तुति - तत्त्वचर्चा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

तीर्थंकरोंके न्हवन जलतें भये तीरथ शर्मदा,
तातें प्रदच्छन देत सुर गन पंचमेरुन की सदा।
दो जलधि ढाई द्वीप में सब गनत-मूल विराजहीं,
पूजौं असी जिनधाम प्रतिमा होहि सुख दुःख भाजहीं।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि अस्सी जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमा-समूह! अत्र अवतर अवतरसंवौषट्।
ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि अस्सी जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमा-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि अस्सी जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमा-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव पषट्।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

शीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जल सों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दर-विद्युन्मालि-पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वमीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

जल केशर करपूर मिलाय, गंध सों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छत सों पूजौं जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता)

वरन अनेक रहे महकाय, फूल सों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

मन वांछित बहु तुरत बनाय, चरु सों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

तम-हर उज्जवल ज्योति जगाय, दीप सों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसों पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

सरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(गीता)

आठ दरबमय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(दोहा)

प्रथम सुदर्शन-स्वामि,
विजय अचल मंदर कहा।
विद्युन्माली नामि,
पंच मेरु जग में प्रगट।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(बेसरी)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजे, भद्र शाल वन भू पर छाजे।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

ऊपर पंच-शतकपर सोहे, नंदन-वन देखत मन मोहे।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(बेसरी)

साढ़े बांसठ सहस ऊंचाई, वन सुमनस शोभे अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

ऊंचा जोजन सहस-छतीसं, पाण्डुक-वन सोहे गिरि-सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(बेसरी)

चारों मेरु समान बखाने, भू पर भद्रशाल चहुं जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

ऊंचे पांच शतक पर भाखे, चारों नंदनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

(बेसरी)

साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सोमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

उच्च अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(बेसरी)

सुर नर चारन वंदन आवें, सो शोभा हम किंह मुख गावें।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(दोहा)

पंच मेरु की आरती, पढ़े सुनें जो कोय।
द्यानत फल जाने प्रभू, तुरत महासुख होय।।

(पुष्पांजली क्षिपेत)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha